

DPN 6984

कर्मकाण्ड विधि व ज्योतिष आदि

Title : ~~सारांश~~ (प्रकीर्ण)  
KARMA KĀṆḌA VIDHĪ VA JYOTIṢĀ ĀDĪ (PRAKĪRṆĀ)

Run. No. 7709

Cat. No.

Micro. No.

Subject उज्जुर्ग Miscellaneous Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 6.5 x 11.7

Folios 23 Lines (in a page) irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 897,

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / stray folios

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :







मूत्रावृद्धनकं प  
 गलाश्लिफिकाक  
 मूत्रमारुकाधनली  
 मलादीपरावना  
 पुनिकासकु  
 किनयरावना  
 विचानसिमाक  
 लानसिमा  
 धनरावना  
 कुजरावना  
 पतापरावना  
 मूत्रमारुकाधन  
 वलिमाला  
 द्यासना  
 नुकवृक्त  
 नजगलुज्ज  
 मूत्रमारुकाधन  
 नजगलुज्ज

(मूत्रावृद्धनकविधानक्रमसंगुनमगदवथापिनि नेदिवलि  
 धूतिथयनयाय॥१॥ वायुगुनमलुल पञ्चगव्यसि कृतमनु  
 नथिन गोसमाधि क्रम संगुन मगथापिनी पूजा अथपूजा  
 धूनकाडा मन्त्रान्तर्गता नवा मगरु॥ स्वसिक्तनूध  
 नमदनक विसृजन निलांजन मानवा मगरुनगाय संगुनवि  
 य सिरुननूय॥॥ अनेगनहनस श्रवणतयाडा दिगगायाडा



वदु सूर्य ॐ द वगा द्यय मचा थका दिन अशुना का नान  
सा पाउ नक सा पाउ ना ला सय वागा स दू वात य क न ख द्यय  
नाम वय x मयुन थि न ला न गने आ सि वा द द क ना  
आ दू स म मान द ग स क य इ क मान विस जन व नि क  
य ॥ के उ ना पा स व जि ग य मा न थू नि धू त का डा सि अ वि नि  
श क क ल ख म सि व ॥ ॐ नि म वा द अ व न क वि धी ॥ ॥

(न भा व दाय ॥ अ न न तु क य व नि क्क त व क तु ना य ना त ॥ सा  
अ लि जि न तु क य ॥ तु क ना मि क य र य स न तु य न तु क ना वा जि  
वा जि व ना त नि व स म क म द य न वि क्क वा य स द व न का स  
द वा द नि ये व व द सूर्य क था म ला पृ थि वि पा य ध नि ये व  
क य न ४ क न प र क था ॥ ध र्म ना ना न्द ना म य न ध र्म ना कि न ना य  
य कि स सि ना द वा अ गि स नि वा सि क ॥ म द ना ३ २ य नि नि ना व



हिनः निमोननतिदवाग्धुद्ववासापन्नममानविकात्राकधागु  
 म्ममहाधुनिवासेनाचउदियसिगासुवासिगायधुधुधुपुः  
 राजनसत्वालाकाग्धलगागुस्मरुतादयः मुदिगागुमिसि  
 गाऊध्वविमनायावपात्रगा॥अविष्मतिनिवासाग्धुअत्रनार्था  
 द्वाप्राप्तदधर्ममद्यानगायध्वसद्वयाध्वगगायत्रध्व॥द्वनगमानिः

वासाग्धुयराकल्यानिवासेनअतिमृद्विस्मितायत्रमधूमतिगताल्ये  
 वेदमगुमिध्वानाध्वार्थागममहायूर्तसंवाधममतकायेवअत्रः  
 तिषननपिनपुताननकुरुकु  
 गाहामविधाभनमृख्यवगुध्वद्ववासरमानूस्थाकायि  
 ह॥स्वस्तिवकूमांस्यादि॥  
 स्वस्तिमहावाता॥दानपतिशारमानस्यस्यादि॥गाहावस्वस्तिवा



वनादवी, यथा प्रयाग, मन्त्रालय, विमानादि, ज्ञानायनी, कर्म  
 ३ (उत्तर ४८ गण) अष्टमारेकाथः॥ कनका, कृतिरासा, वेष्मा, लय, तनावनी  
 पूर्वानक, मना, नवासि, तय, मन्त्रनी, दक्षिण, मन्त्रमा, सिनि, वा, नादि  
 मन्त्रि, शिष्य, ल, श्वा, दन्, दत्त, ग, स्व, नि, रा॥ अ, मन्त्र, व, को, मानी, न, क  
 व, म, श, क, ला, द्वा, प, उ, से, म, का, सा, ४, न, म, न, व, वे, म, वी, स, क, र्क, नि  
 क, ला, ला, आ, वा, म, लु, मा, नि, नि, नी, रा, व, ल, व, ल, र्क, ला, का, रु, न, ल, र, पि, ली, वा  
 य, चाल, सि, न, म, म, वि, म, मा, त, वा, व, नी, उ, म, न्या, ल, म, हा, न, म्नी, लो, न, व, ल, क, ल, प्र  
 हा, अ, द्वि, सि, द्वि, क, वि, द, वी, सा, र्वा, सा, प, नि, पू, नि, नी, सि, न, व, द, ना, म्नी, क, न, उ, उ

यविना, किता, अ, क, मा, नां, क, म, व, मं, जी, म, ल, न, कि, को, य, ध, व, क, उ, म, नू, ख, द्वां  
 ग, स, गा, धि, उ, र, स, र्व, क, वा, मा, र्क, स, र्व, क, य, र्वा, न, अ, क, थ, क, र्म, स, र्व, र, वि, नू  
 म, द्वा, व, र, म, थ, म, र, क, द्वा, र्क, म, व, उ, उ, क, द्वा, र्क, न, र, म, व, उ, उ, क, ध, ना, र्क, व, अ, क  
 ४, म, र्क, म, र्क, स, र्व, नि, काल, सा, रि, ना, पु, र्वा, ली, उ, प, द, लि, ता॥ ॥ उत्तर, मा, रु, ग  
 य, लो, क, वि, डा, प, न, क, नी, स, र्व, द्वा, र्क, प, थ, म, क, म, र्क, मां, स, म, नि, त, पि, य, म, हा  
 सि, नि, वि, वि, ध, वि, क, ठ, व, म, नू, प, ना, कि, सि, लु, त, न, प, त, पि, म, व, सि  
 लो, न, य, ठ, क, क, म, मा, य, सि, र्क, वा, य, म, नू, म, र्क, व, वा, र्क, वि, ज, न, क



८ महादिय ॥ रावना ॥ स्वानन्द शान्त ॥ कनदिय गून्धता विराय लानल्यं  
विरुय ॥ धूप, निला, जैन, लाहानि नका, यक्षाय दान यज्ञा, स्वानता  
न ॥ महादिय धियुक्त ॥ महादा नय दय्या ॥ अथ अमस्ताक सिद्ध  
त्यादि ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ वज्र एव दृष्टि तिष्ठुं घट्ट ॥ ध्या १०८  
वज्रपथ स्वर्गका, स्वानमाना, गाय आरुग कदापि धमक  
न, रुततया उा नूय ॥ ॐ तिपति स्वा मनु ॥ ॥

[illegible]



न धूनकाउ वलिपूजा वाकपूजा मधुलथिन कितन पाथसमाफ  
 गतादुन आगिवाद दक्षिण वाधं चूय वलिपूजा विय विसर्जन  
 वलिपूजा ॥ तत्र सुकउना धूनकाउ लिखपान धूनकाउ  
 रुदिनिनक वजिक १ नाथ १ वा साता ४ धति धूनकाउ नाकात  
 नयात अपत्रप श्रीचक्रसम नयतिरवादवाय कंसकनाट  
 क अपन मुखतपज थपि आदि अरु दगु मत पाण सध धनिममा  
 पूजा रुनजप पूजा वजिहो न सिधुत न किन आदिकाय मगुथि

न स्नानतन समाधि मामकिपूजा दडापूजा मरुतिरुय धूनकाउ  
 पिपुथय ११ चूयकन च धूनकाउ मुखतपूजा मधुलथिन स्नान  
 तन आगिवाद दक्षिण दगु सकय वाकक आदुय सम  
 याचक्र जावातय दअवा ३ पदमराजनकाय कायनास वात  
 कनचूय जाखन जाधनितय मालकाय नीतकना ०० ॥ मूनय  
 जायाय मरुनिआकाय नीतहाजतन कंसपाणदिनक किराग  
 खन थिनामेतितय वनिविसर्जन वलिपात आया २ काय मितव



सुममं वलि दायधूनकाउ। अक्षरगकाय कायना शरीतय क  
 नखकाय कायना पूजायाय धूमगमविहमाधि कंमकेनाटकमिः  
 नाउ मूनधायिनिह जोरुगु ध्वयकाउ म्वयानरूतकानवि  
 य कनकस ॥ अक्षरगकाउ कंनिस कनखकाउयनि या  
 कंतातक धूनकाउ कनखस सिन विहर्जन वातकनकाय  
 नापिय वपुवक ॥ ॥ यनयोनवातय जाचुसनिउतयाउ सष  
 वनिविय गीतप्रमादित वज्रमानकोरुन पावनाक धमान

मणुलधिन्नक गीतद्विनि पुन्याशखविय दमयति सिंहजान  
 दिपदान सकन लउलाय सकन म्वरु म्वरुम्वकउतवियमान ॥ ते  
 मूनचाय्यात पविच्छाकन निस कंवा कायद मूनधानयी ॥



(समपिता (समता २०११) अवलभुं पुदिपदा ग्रंथ  
 (पुपिता ने श्वकृन् नव घनयो सनपतिया दिवन  
 (वृद्धपिता दुथदा सनपतिरवि वदुयति निपिनननन  
 (पितामह दुथकाया वासन झा कन वडेयानि  
 (पुपितामह इन् काखक यो वता निमद वरानविता दुध  
 (वृद्धपितामह सति निसनीअ दून वाज धवि पति कयपू वरु  
 (पानू जाकिरुआला छे १ दा सरु १ वा रन झा म्द १ रामद

(नूडाहा सिद्धन पीनाह ॥ गहइय ॥ ॥ भाकि  
 क हा मड ग्राम की न अकत न्म निरक ॥ ॥ विधी  
 रचं दान पूजा ॥ धनका डी ॥ दानका डी ॥ पुन  
 पूजा ॥ उं वडा वा ये मु लि धा रुदं मा स य व्य नम ॥  
 कय न तनक ॥ ॥ उं वडा वा ये म स दान कय रुका  
 र्युपतिवृष्टादा ॥ ॥ कल खवि य ॥ ॥ उं वडा वा



येन लिङ्गावदनं सिद्ध्यन्तं स्वर्गं ॥ चतुर्था ॥ उवाच ॥  
 शरीरं कायं शरीरं पुत्रिणा यं यूप्यं नमः ॥ शरीरं ॥  
 सयः ॥ उगुनीश्वर उगुनी दानं वाकं कायं ॥ दानं ददा  
 रूपं हस्तं शरीरं ॥ दानं वाक्कायं ॥ ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ अष्टविधियुगाविधिमाह ॥ ॥ नकसमूहा  
 यार्थकर्मोयार्थउपाध्माहासहितना ॥ गुनमधुन ॥ सिद्धनगयदणुः  
 नि कूमयुजा ॥ दवसकखानदु हात्रनयाडा ॥ पूषवक्राननीस  
 ॥ रावना ॥ कात्रविजभकप्रायययाग ॥ असिगाऊरनवधमकभट्ट

ॐ स्व माहात्म्यम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



36

[illegible]

22

[illegible]



यत्र वचसृष्टं तद्ध (अमयं) तथ द्वि तस्य पत्रं यत्  
 दधिर्घृतं यत् तानि व दृष्टं तर्कं यत् यत् तन्निष्ठं दकं  
 तथैव यत् (अ) तती स कयी नोश्च दनिर्घिनं न विंग  
 ना॥ तदा रज्जु जया मोश्च कपि नायन मु तं प्रसिद्धं साम  
 दालिश्चि श्रु मा नी (अ) संपदं ॥

५ नाजं x

कस्य गति मति रगति राज मनु स्व त्र वाचा ॥ ॥ गीष्म  
 कस्य गुरु दय पितृ स मनी व प्रीति दा सो न सा र्द्धं सक या स र  
 सत रुत्रं (अ) स्त्री मात कं यि प्रिया मि शि न तिरु नि व  
 नं की दा व मनु करु नो र्जन रु च द नी त की नू ज रु मा क  
 सि पु रं दा दि य ॥ ॥ (सिद्धि गुप्ता हा ध म गु न्म हा द व गि श्र  
 द द मा र ना ना य न सा न मा न मृ त न रु ना म रु पु रा श्र ध न  
 ॥ ॥ (सिद्धि मि द) रु स पा ल (स ध न) स थ १ इ ष्ठा यि क न वृ न







१८

|            |           |           |        |           |
|------------|-----------|-----------|--------|-----------|
| (कयं जानन) | (पीनाकसी) | (वधन)     | (८ नव) | (पेवधाउ॥) |
| (हानैव)    | (इवनसा)   | (ललीक)    | (७ का) | (न॥)      |
| (उलंग)     | (अपहन)    | (वल)      | (६ का) | (नीजलम)   |
| (काजन)     | (खईन)     | (आनदी)    | (५ का) | (कन॥)     |
| (पविताल)   | (मार्नल)  |           | (४ का) | (निलि॥)   |
| (महन)      | (लल)      |           | (३ का) | (कस॥)     |
| (कनदील)    | (अय)      | (वैधन)    | (२ का) | (पेवधाउ॥) |
| (घज)       | (वधन)     | (जीवन)    | (१ का) | (न॥)      |
| (उलीया)    | (आवधन)    | (जीनगनसा) | (० का) | (अहा॥)    |
| (रज)       | (उक)      |           |        | (जीजन॥)   |

३४

|      |        |       |
|------|--------|-------|
| ॐ ना | रुम    | तिम   |
| यप   | उजा    | असत   |
| खसि  | कस     | पम    |
| सगुल | जम     | सिपति |
| गाम  | रुमानि | पम    |
| स    | उजा    | नकउ   |
|      |        | जा    |



(जनका विधानमा  
 ह॥ धयदप कसः  
 मयन यात ४ धयाः  
 दवन पतिन द  
 कर्म तय को मानिह



गा. नक रुजा. मि किं. ॥ त म्. ००. नाय म न जा. ॥  
वाका स. क न स. क र्वा म कं त. ॥ ध ति ध प द ध क म  
न. थ न. म वा य. पु न. ० म लु न. पं च ग व. ॥ सि  
धु त. म लु न थि न. स्वा न ता न. ॥ वि स मा धि. क म  
धि वा स न. थ न लि. ध व वृ जा. ॥ नि क रं स्व का था.

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥











|                                               |                                     |
|-----------------------------------------------|-------------------------------------|
| १. कृति. क. उ. न. मा. मा. ह.                  | २. तिन व. द. सु. तिन. स. मा. फ.     |
| (म. कृ. क. व. लि. या. त. ॥                    | (ज. ने. ॥ क. य. न. ॥ सि. ध. न. ॥    |
| (म. अ. स. ॥ क. न. द. ग. ॥ व. लि. ॥ ता. य.     | (ने. अ. स. ॥ क. क. म. ॥ ना. क. व. ॥ |
| (प. र्व. ॥ क. ता. मा. स. ॥ क्षा. स. ॥         | (वा. अ. ध. ॥ वि. ना. प. न. ॥        |
| (द. क्रि. ॥ घ. गु. नी. ॥ व. त्रि. ॥ हा. कू. ॥ | (००. म. ॥ क. य. द. हा. ॥ हा. कू. ॥  |
| (य. श्रि. म. ॥ ग. न्ध. न. स. ॥ ता. य. ॥       | (ध. र्मे. ॥ दि. ग. या. ॥ व. ॥       |
| (उ. रु. न. ॥ घ. न. क. सि. ॥ क. ॥              |                                     |

थिं स. त्र. सु. ख. ए. जि. ध. न. द. ग. ॥ ॥ क. ता. द. दं. अ. वि. क. ना. य. सु. स. क. नि.  
 क. ता. हा. द. क. या. अ. नि. य. नि. य. हा. हा. क. स. ॥ त्रि. नि. अ. वि. ता. हा. डा. य. म.  
 य. अ. ग. दि. या. का. या. डा. स. गा. सु. श. य. द. अ. य. मी. रु. त. हां. ॥ ॥ सि. यि.  
 मि. य. म. या. य. का. थ. रि. डा. ॥ हा. ॥ मि. मा. ॥ अ. य. य. म. क. ट. हा. जि. ॥ य.  
 य. य. ति. थं. या. द. मि. मा. ॥ य. सा. मि. मा. सु. ख. ए. जि. नि. ॥ ॥ मि. स. द. द. ५.  
 हा. कू. ए. जि. नि. ॥ अ. ति. ता. हा. डा. ॥ सि. य. ता. हा. डा. मि. स. अ. य. क. नि. ॥ ॥



न  
३

महावक्रसहितरिग्या १३ ॥ कुरुहिरुककक गअदा मलाकु सुत्रकनि दा  
मत्राक हग्म प्रमि (थां) लादु कथुसुख आदगसायगि रागि ॥ स वा गव  
रुगा मजा य सुकिनि ॥ यथोव दा सुत्रकनि ॥ वाया च सायिडा यथकि  
वगहु सुत्रकनि सुख रागि ॥ यथु दा नृदिकया वनययि न का २ दा  
नृदिकया सामनययुअ सगं दा मला ककि नृदि कज दमिसा दनजाक थ  
का हा कु नृसं ग्वनि लादु थका सुत्रकनि मत्रहसया थि वकु माया

वात्र स्याथि म्वात दान ह या मसया ॥ यथी गात्रा न कौ द्र ससुत  
नृयथा स्याद मात्र कि यिडा दगा सुयथया कनि थि ग्वया ॥  
कि सात्वया रागद वडा व द्युगु धन शं नृयु वा सिं हया ॥ च  
या कि सिया थथि (म द का) मया सुख रागि ॥ यथम न स नृयु अ  
प्राद्वनि र्वा न उयम वा मघा नया उनि थि रा हवि द्या स म्हा



नमो अक्षय्या लया ॥ गुरुत्रिक लयि ॥ थथिं ज्यह्वा ल दृष्टि सम  
सत्र ॥ ॥ कथं कुरु सि सानु ॥ गुरुधन लयन आ ॥ नमो  
गुरु सि ॥ अक्ष

दक्षि  
यविनि  
सत्रथ  
आत्र  
सिमसन  
दक्षिंलग्न  
मैनु  
रूपि  
सिधिवि  
आताव  
कुत्रया  
कुत्रलग्न  
कयनाय  
दयदा  
नदादरु  
नया  
०३ काद्र  
सिधयभा  
सिधवदि  
नमयभा  
नादीग्रदा  
वीवीदा  
दातागम  
सीखास  
कयंम  
यदा



(पी३ नानतिपूजाविधि)  
 (पिथुगाला१  
 (पूनुगाला१ भूपाय  
 (पञ्चगंधवित  
 (गडाइइइइइ१  
 (वइइइइइइ१  
 (कर्पूयनाइ१  
 (पंचपत्ताइ२०  
 (अइवा यानट  
 (गाजज कापूइतां  
 (दकूसाकापना१  
 (वल्लिपूययातकापना१  
 (धकिवाजातड  
 (सिप्ताहल चाकूमधि  
 (कथगुहोया ३, लि  
 (ग्वचगु१ मनव१  
 (खेज ग्वड कापु२

सिद्धा साधि१

(पंच  
 (महोकात्र  
 (वज्रयोगी  
 (वागु  
 (ग्वककु  
 (गुग्गुधनि  
 (मुत्रयनि  
 (विमरुव  
 (नीचयनि  
 (इयवागुध  
 (गानतन  
 (वाधयिस्व  
 (धमदव  
 (सिद्ध  
 (वता  
 (सुयति  
 (नमगतभव  
 (धवासादि  
 (नात्रयता  
 (नाईयत  
 (पमभदि  
 (गुग्गुता  
 (नवध  
 (कमन  
 (इ०० माइ

(गदमका  
 (महाचाधि  
 (गतिवालाद  
 (सभ  
 (कमात्रिधा  
 (दातानिम  
 (हार्मना  
 (सीदाक  
 (सिद्धाध



(कोलवाग्व १  
 (शोताग्व १  
 (मूलपाग्व २  
 (अपिजाग्व ३ गुनूचा  
 (देछापातवा ३  
 (कानावालेपिजा ३  
 (घउडाके १ म्वाक  
 (खोनमा ला ३  
 (दयक १ रुक्खा  
 (कपूतपा ३  
 (दोनग्व २०  
 (शेखे, नूगको  
 (साय, चात, कध, नरा  
 (खलेयग्व १  
 (ताय, पाताय, धनकसि  
 (साइइ, धूं, जजका  
 (००ीका, युका, कयपेन  
 (अनू ०० ता

(राजातरल १५ (मामकनसराना १० (प्रीताक ६  
 (पर्वदसायली १० (निनानया सावन ११ (विताय ६  
 (वित्रिह, छुयशीर १० (महादान ६  
 (वत्रिह, धनी १० (खजया मिना ३३  
 (निगतय, वधि ३२ (वधुया मिना २३  
 (वधिरया, मर्य ३२ (वित्रिहय जीन ३९  
 (अवधु ३० (वधुय मल ३९  
 (मामक १० (महान, वधु, गाय ३९  
 (पतिहया हाया, वधु १०



|                     |                  |                   |
|---------------------|------------------|-------------------|
| वाव वनका ॥ ५१       | (धुन रावल्म ॥ २  | (अरु पि। थप ता ३  |
| (लोहा डालिका क ५२   | (पताप रावल्म ॥ २ | (अरु मारका पुन ४  |
| (अरु मारका धात्री ३ | (अरु मारका धूप २ | (जनका कुरवा ५     |
| (मकादिप रावना ४     | (वात्रमात्रा १०  | (पथर गय सिना ६    |
| (पतिशामनु ॥ ५       | (दवा सन ३०       | (रुपतिथी ७        |
| (कनल रावल्म ॥ ५     | उकट ३१           | (विष्मन नय पूजा ८ |
| (दिना न सिना ॥ ५    | (मवगुह पु ॥ ३४   | (मांम इति कथ ९    |
| (दातातपका ॥ ५       | (अरु मारका पु ५  | (सि नक्षाम १०     |
| (अन रावल्म ॥ ५      | (नवगुह पु ॥ ३५   | (कोत्रा ११        |

वीनय योस समय वियाया येथशक गया विमुक्ति कना ॥ अइ नइने  
वायु नू त्रिहंक था कथय सति ॥ सिद्ध उया भिवृण कि ना रति समर्थ वि  
सय कन ॥ मे (अव नू अये के ॥ ॥ हय निय थि वी चाला उव ग या ता न  
सिद्धि ॥ अना एगल नमो अक ॥ पुर्व दान जन वल जे ना वन ॥  
नम न साय न ना ए व न कान्य पदा य क ॥ लक्ष्मी गं नि दं ति य क ॥ नि  
दान लू न व न अ म ता रा ॥ व अ क व ल धन स मा गि पृष्ठि ज न पि य क  
ग स व छि च य भि म द्वा न न त स र्व ॥ ॥ सि ग ह स र्व व न न न क ल प थ म  
स म य नि जि ता रा व त भ क उ ल न दान अ मा ध य सि द्धि नि नि न न  
द वि मु द्धि ॥ ॥



सं० ८०० उत हृदय उदसि तनवया नृपुतना  
धनकाया वा हां हसि नृपुतना हां हीक मृगुनिया  
नृपुतना हां मवा हां २ कृपु हायका या x

सं० ८०० तम्य वल उद्विपुदिनदा अदिन कृद यस्तन  
धंशया संगुस मयकद अयाक धैका वा हां यया वि  
विर्सि थजगुवानम वाद सिकमृगुनिया हां सि  
नाजगुवा हां नन च हां हायका उ मा नव  
पूजाया क गुवा च नृ मवा हां ॥ श्री ज गुया य इ र म  
कृपु हां न क ता न जगुनय संगुस सिकमृगुनिया उद्विपु  
कृपु वानन च हां हां च कन ना सि द अ सि द या क ना त या